अभिस्वीकृति-पत्र

मंगलवार, १ दिसम्बर, २०२०

आत्मीय पाठकगण,

जब हम शीत ऋतु के पर्वों का आरम्भ कर रहे हैं, और आपकी दिनचर्या भी गति पकड़ती जा रही है, मैं आपके समय में से कुछ क्षण लेना चाहती हूँ, आपके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए कि आपने कितनी तत्परता व उत्साह के साथ 'दर्शन और मनन' की गोष्ठियों में भाग लिया।

एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन की स्टाफ़ सदस्या के रूप में मैं जो भी सेवा अर्पित करती हूँ उससे मुझे सिद्धयोग की सिखावनियों के प्रति और भी गहरी समझ प्राप्त हुई है, व मेरे अन्दर उनके लिए और भी अधिक कृतज्ञता का भाव उदित हुआ है। अपनी सेवा के दौरान मुझे कितने ही प्रतिभाशाली, समर्पित और सेवानिष्ठ सिद्धयोगियों से मिलने का सुअवसर मिला है। हर एक व्यक्ति के साथ सेवा करना कितना आनन्ददायी रहा है।

पिछले माह मुझे 'दर्शन और मनन' की सिद्धयोग गोष्ठियों की प्रबन्ध निदेशक के रूप में सेवा अर्पित करने का कार्य मिला। श्री मुक्तानन्द आश्रम से और सार्वभौमिक सिद्धयोग संघम् से जिन वक्ताओं, शिक्षकों, संगीतकारों और तकनीकी सेवाकर्ताओं ने इन गोष्ठियों में अपना योगदान दिया, उन सभी से मैं बहुत प्रभावित हुई।

यह अतीव सम्मान का विषय है कि मैं ऐसी सेवा कर पाई जिसमें अत्यधिक उत्तरदायित्व लेना अपेक्षित है—यानी इस प्रकार श्रीगुरुमाई के मिशन में अपना योगदान देने का कार्य सौंपा जाना। यह मेरा सद्भाग्य है कि महामारी के इस समय के दौरान मैं मानवता की सेवा में ठोस रूप से कुछ कर पाई। और मुझे बहुत हर्ष हो रहा है कि मेरे पास आगे भी अनेक वर्ष हैं कि मैं सिद्धयोग की सिखावनियों का अध्ययन कर उनके विषय में अपनी समझ को सशक्त कर सकूँ—विशेषकर 'भगवान' के छः दिव्य गुणों का जिनके विषय में हमने 'दर्शन और मनन' की गोष्ठियों में चिन्तन-मनन किया। ये दिव्य गुण हैं :

समग्र ऐश्वर्य,
धर्म,
यश,
श्री,
ज्ञान और
वैराग्य।

मैं निश्चित ही इन सद्‌गुणों पर आगे अध्ययन जारी रखूँगी, और मैं आपको भी ऐसा करने के लिए आमन्त्रित करती हूँ। जैसा कि आप जानते हैं, आप जितना अधिक किसी सिखावनी पर चिन्तन-मनन करते हैं, आपका दृष्टिकोण उतना अधिक विस्तृत होता जाता है, और उतना अधिक आप अपनी सत्ता के केन्द्र में दृढ़ता से प्रतिष्ठित होते जाते हैं।

एक बार फिर आपका धन्यवाद कि आपने गुरुमाई जी के आमन्त्रण के प्रति इतनी उत्साहपूर्ण प्रतिक्रिया व्यक्त की, जिसके परिणामस्वरूप मुझे भी प्रबन्ध निदेशक की सेवा करने का अद्‌भुत अवसर प्राप्त हुआ।

चूँकि वर्ष २०२० ऐसा वर्ष रहा है जब हर दिन कोई न कोई नई उलझन सामने आ जाती है, अतः पर्वों के इस मौसम के लिए आपके लिए मेरी शुभकामना यह है कि आपको वह समाधान मिले—सही समाधान—जो आपकी उलझन को सुलझा दे।

आदर सहित,

गौरी मौरर
'दर्शन और मनन' की सिद्धयोग गोष्ठियों की प्रबन्ध निदेशक
एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।